

{ कुदो ? णाणजीवं पडुच्चं जहण्णेण अंतोमुहुतं, उक्कसेणं पलिदोवमस्सं संखेज्जदिभागो, एगजीवं पडुच्चं जहण्णुक्कस्सेण १ अंतोमुहुतमिच्चेएहि तेउपम्मलेस्सियसम्मामिच्छादिट्ठीणं २ तंतो भेदाभावा ।

संजदासंजद-पमत-अप्पमतसंजदा केवचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पडुच्चं सब्बधा ३
॥२९६॥

सुगममेदं सुतं ।

एगजीवं पडुच्चं जहण्णेण एगसमयं ४ ॥२९७॥

तत्थ ताव संजदासंजदाणमगसमयपरुवणा कीरदे_ एक्को मिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी वा वड्डमाणतेउलेस्सिओ एगसमओ तेउलेस्साए अत्थि ति संजमासंजमं पडिवण्णो । एगसमयं संजमासंजमं तेउलेस्साए सह दिट्ठ । विदियसमए संजदासंजदो पम्मलेस्सं गदो । एसा लेस्सापरावत्ती (१० । अधवा एक्को संजदासंजदो हायमाण-पम्मलेस्सिओ पम्मलेस्सिध्दाए खीणाए एगसमयं संजमासंजमगुणो अत्थि ति तेउलेस्सिओ जादो । तेउलेस्साए सह संजमासंजमो एगसमयं दिट्ठो । विदियसमए तीए लेस्साए सह }

< क्योंकि, नाना जीवोकी अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहुर्त और उत्कृष्ट काल पल्योपमका असंख्यातवा भागप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहुर्त है । इस प्रकारसे तेजोलेश्या और पद्यलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोका ओघप्ररूपणासे कोई भेद नहीं है ।

उक्त दोनो लेश्यावाले संयतासंयत, प्रमतसंयत और अप्रमतसंयत जीव कितने काल तक होते है? नाना जीवकी अपेक्षा सर्वकाल होते है ॥२९६॥

यह सूत्र सुगम है ।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोका जघन्य काल एक समय है ॥२९७॥

इनमेंसे पहले संयतासंयतोंके लेश्यासम्बन्धी एक समयकी प्ररुपणा की जाती है -

वर्धमान तेजोलेश्यावाला एक मिथ्यादृष्टि अथवा असंयतसम्यग्दृष्टि जीव तेजोलेश्याके कालमे एक समय अवशेष रह जानेपर संयमासंयमको प्राप्त हुआ । एक समय संयमासंयम तेजोलेश्याके साथ दृष्टिगोचर हुआ । दूसरे समय वह संयमासंयत पद्मलेश्याको प्राप्त हो गया । यह लेश्यापरिवर्तन सम्बन्धी एक समयकी प्ररुपणा है (१) अथवा, हायमान पद्मलेश्यावाला एक संयतासंयत पद्मलेश्याके कालके क्षीण हो जाने पर एक समय संयमासंयम गुणस्थानका अवशेष रहने पर तेजोलेश्यावाला हो गया । तेजोलेश्याके साथ संयमासंयम एक समय दृष्ट

>

{ १ प्रतिषु `अंतोमुहुतो मुहुत` इति पाठः । २ प्रतिषु मिच्छादिद्विणं इति पाठः ।

३ संयतासंयतप्रमताप्रमतानां नानाजीवापेक्षया सर्वः कालः । स सि १,८

४ एकजीवं प्रति जघन्येनैकः समयः । स सि १,८ }

{ असंजदसम्मादिद्वि सम्मामिच्छादिद्वि सासणसम्मादिद्वि मिच्छादिद्वि वा जादो । एसा गुणपरावती (२) । मरण-वाघादेहि एगसमओ ण लब्भदि ।

संपहि पम्मलेस्साए उच्चदे । तं जघा- एगो मिच्छादिद्वि असंजदसम्मादिद्वि वा वड्डमाणपम्मलेस्सिओ पम्मलेस्सध्दाए एगो समओ अत्थि ति संजमासंजमं पडिवण्णो । विदियसमए संजमासंजमेण सह सुक्कलेस्सं गदो । एसा लेस्सापरावती (३) । अधवा वड्डमाणतेउलेस्सिओ संजदासंजदो तेउलेस्सध्दाए खएण पम्मलेस्सिओ जादो । एगसमयं पम्मलेस्साए सह संजमासंजमं दिद्वं विदियसमए अप्पमतो जादो । एसा गुणपरावती । अधवा संजदासंजदो हायमाणा सुक्कलेस्सिओ सुक्कलेस्सध्दाखएण पम्मलेस्सिओ जादो । विदियसमए पम्मलेस्सिओ चेव, कित्तु असंजदसम्मादिद्वि सम्मामिच्छादिद्वि सासणसम्मादिद्वि मिच्छादिद्वि वा जादो । एसा गुणपरावती (४) । मिच्छादिद्वि असंजदसम्मादिद्विगुणव्वाणेसु तेउ-पम्मलेस्साणं लेस्सा- गुणपरावतीओ अस्सिदूण एगसमओ किण्ण उच्चदे ? ण, }

< हुआ। द्वितीय समयमे उसी लेश्याके साथ असंयतसम्यग्दृष्टि या सम्यग्मिथ्यादृष्टि या सासादन सम्यग्दृष्टि अथवा मिथ्यादृष्टि हो गया। यह गुणस्थानपरिवर्तनके द्वारा एक समयकी प्ररुपणा हुई (२)। यहां पर मरण और व्याघातके द्वारा एक समय नहीं पाया जाता है।

अब पद्मलेश्याके एक समयकी प्ररुपणा कहते हैं। जैसे - वर्धमान पद्मलेश्यावाला कोई एक मिथ्यादृष्टि अथवा असंयतसम्यग्दृष्टि जीव, पद्मलेश्याके कालमें एक समय अवशेष रहने पर संयमासंयमको प्राप्त हुआ। द्वितीय समयमे संयमासंयमके साथ ही शुक्ललेश्याको प्राप्त हुआ। यह लेश्यापरावर्तनसम्बन्धी एक समयकी प्ररुपणा हुई (३)। अथवा, वर्धमान तेजोलेश्यावाला कोई संयतासंयत तेजोलेश्याके कालके क्षय हो जानेसे पद्मलेश्यावाला हो गया। एक समय पद्मलेश्यावाला कोई संयतासंयत तेजोलेश्याके कालके क्षय हो जानेसे पद्मलेश्यावाला हो गया। एक समय पद्मलेश्याके साथ संयमासंयम दृष्टिगोचर हुआ। और वह द्वितीय समयमे अप्रमत्तसंयत हो गया। यह गुणस्थानपरिवर्तनकी अपेक्षा एक समयकी प्ररुपणा हुई। अथवा, हायमान शुक्ललेश्यावाला हो गया। द्वितीय समयमे वह पद्मलेश्यावाला ही है किन्तु असंयतसम्यग्दृष्टि अथवा सम्यग्मिथ्यादृष्टि अथवा सासादनसम्यग्दृष्टि अथवा मिथ्यादृष्टि हो गया। यह गुणस्थानपरिवर्तनकी अपेक्षा एक समयकी प्ररुपणा हुई (४)।

शंका— मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि इनदो गुणस्थानोमे तेज और पद्मलेश्यावाले जीवोकी लेश्या और गुणस्थानसम्बन्धी परिवर्तनोको आश्रय करके एक समयकी प्ररुपणा क्यों नहीं कही ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, इन गुणस्थानोमे एक समयकी प्ररुपणाका होना संभव नहीं है।

>

{ तत्थ एगसमयंसंभवाभावा । वड्डमाणतेउलेस्सादो पम्मलेस्सं गतूण विदियसमए उवरिमगुणङ्गाणं गच्छंताणं मिच्छादिटि असंजदसम्मादिट्ठीणं पम्मलेस्साए एगसमओ लब्भदि । हायमाणतेउलेस्साए एगसमओ अत्थि ति मिच्छादिट्ठिअसंजदसम्मादिट्ठि गुणङ्गाणे पडिवण्णाणं

तेउ- लेस्साए एगसमओ लब्भदि । एवं काउ- णीललेस्साणं पि एगसमओ लब्भदि ति उत्ते ण लब्भदि, जदो मिच्छादिट्ठि- असंजदसम्मादिट्ठिणो एगसमयं लेस्साए परिणमिय विदियसमएं अण्णगुणं लेस्संतरं वा ण गच्छंति । एदाणि गुणट्ठाणाणी पडिवज्जंता वि लेस्साए एगो समओ अत्थि ति ण पडिवज्जंति । कुदो ? संभावादो । हेट्ठिमगुणट्ठाणाणि लेस्साए एगो समओ अत्थि ति जहा संजमासंजमगुणट्ठाणं पडिवज्जंति पमतसंजदो तथा संजमासंजमगुणट्ठाणं किण्णं पडिवज्जदे ? सहावदो । अधवा णत्थि एत्थ पडिसेहो ।

पमतस्स उच्चदे - एक्को पमतो हायमाण-पम्मलेस्साए अच्छिदो । तिस्से अध्दाखएण पमतध्दाए एगो समओ अत्थि ति तेउलेस्सिओ जादो एगसमाओ दिट्ठो । }

< वर्धमान तेजोलेश्यासे पद्मलेश्याको जाकर द्वितीय समयमे उपरिम गुणस्थानोंको जानेवाले मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोके पद्मलेश्याके साथ एक समय पाया जाता है । इसी प्रकार हायमान तेजोलेश्यामे एक समय अवशेष रहने पर मिथ्यादृष्टि या असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानको प्राप्त होनेवाले जीवोके तेजोलेश्याके साथ एक समय पाया जाता है ।

शंका__ तेज और पद्मलेश्याके समान ही कापोत और नीललेश्याओका भी एक समय पाया जाता है, (फिर उसे क्यो नही कहां)?

समाधान- कापोत और नीललेश्याके साथ एक समय नही पाया जाता है, क्योकि, मिथ्यादृष्टि अथवा असंयतसम्यग्दृष्टि जीव एक समयमे विवक्षित लेश्याके द्वारा परिणत होकर द्वितीय समयमे अन्य गुणस्थानको, अथवा अन्य लेश्याको नही जाते है । तथा इन गुणस्थानोको प्राप्त होनेवाले भी जीव विवक्षित धारण की गई लेश्याके कालमे एक समय अवशिष्ट रहने पर उन उन गुणस्थानोको नही प्राप्त होते है, क्योकि, ऐसा स्वभाव ही है ।

शंका_ अपनी लेश्यामे एक समय रहने पर जैसे नीचेके गुणस्थानवाले संयमासंयम गुणस्थानको प्राप्त होते है, उसी प्रकारसे प्रमतसंयत भी संयमासंयम गुणस्थानको क्यो नही प्राप्त होता है?

समाधान__ ऐसा स्वभाव ही है । अथवा , इस विषयमे केई प्रतिषेध नही है ।

अब प्रमतसंयतका काल कहते है __ एक प्रमतसंयत हायमान पद्यलेश्यामे विद्यमान था ।

उस लेश्याके कालक्षयसे तथा प्रमतसंयत गुणस्थानकेकालमे एक समय अवशेष रहने पर वह तेजोलेश्यावाला हो गया । एक समय वह तेजोलेश्याके साथ प्रमतसंयतके >

{ विदियसमए अप्पमततो चेव, किंतु सुक्कलेस्सं गदो । एसा लेस्सापरावत्ती (१) । अधवा अप्पमततो हायमाणसुक्कलेस्सिगो सुक्कलेस्सध्दाखएण पम्मलेस्सिगो जादो । विदियसमए पम्मलेस्साए सह पमतगुणं पडिवण्णो । एसा गुणपरावत्ती (२) । अधवा पमतो पम्मलेस्साए अच्छिदो पमतसध्दाए खीणाए एगसमयं जीविदमत्थि ति अप्पमततो जादो । विदियसमए मदो देवतं गदो । एदं मरणेण (३) ।

उक्कस्समंतोमुहुतं१ ॥२९८॥

तं जधा- संजदासंजदो पमतसंजदो अप्पमतसंजदो वा तेउ-पम्मलेस्सासु अप्पिलेस्साए परिणमिय सब्बुक्कस्समंतोमुहुतमच्छिय अणप्पिदलेस्सं गदो ।

सुक्कलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पडुच्च सब्बध्दा२ ॥२९९॥

कुदो? तिसु वि कालेसु सुक्कलेस्सियमिच्छादिट्ठीणं विरहाभावा । }

< कालमे एक समय अवशेष रहने पर अप्रमतसंयत हो गया । वह द्वितीय समयमें अप्रमतसंयत ही रहा, किन्तु शुक्ललेश्याकी प्राप्त हो गया । इस प्रकार यह लेश्यापरिवर्तन हुआ (१) । अथवा, हायमान शुक्ललेश्यावाला कोई अप्रमतसंयत जीव शुक्ललेश्याके कालक्षयसे पद्म लेश्यावाला हो गया । द्वितीय समयमे पद्मलेश्याके साथ प्रमतगुणस्थानको प्राप्त हुआ । यह गुणस्थान परिवर्तनसम्बन्धी एक समयकी प्ररुपणा हुई (२) ।

अथवा, कोई प्रमतसंयत पद्मलेश्यामे विद्यमान था । वह प्रमतकालके क्षीण हो जाने पर, तथा एक समयप्रमाण जीवनके शेष रहने पर अप्रमतसंयत हो गया, दूसरे समयमे मरा और देवत्वको प्राप्त हो गया । यह मरणके साथ एक समयकी प्ररुपणा हुई (३)।

तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावाले संयतासंयत, प्रमतसंयत और अप्रमतसंयतोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहुर्त है ॥२९८॥

जैसे- केई संयतासंयत, अथवा प्रमतसंयत अथवा अप्रमतसंयत जीव तेजोलेश्या और पद्मलेश्याओंमेसे विवक्षित किसी एक लेश्याके परिणत होकर और सर्वोत्कृष्ट अन्तर्मुहुर्तकाल रह करके अविवक्षित लेश्याको प्राप्त हो गया ।

शुक्ललेश्यामें मिथ्यादृष्टि जीव कितने काल तक होते हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२९९॥

क्योकि, तीनों ही कालोंमे शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके विरहका अभाव है ।

>

{ १ उत्कर्षेणान्तमुहुर्त : । स.सि.१,८.

२ शुक्ललेश्यानां मिथ्यादृष्टेर्नानाजीवापेक्षया सर्वःकालः । स.सि.१,८. }

{ एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुतं१ ॥३००॥

तं जधा- एक्को मिच्छादिद्वी वड्ढमाणपम्मलेस्सिओ सगध्दाए खएण सुक्कलेस्सिओ जादो ।
सव्वजहण्णमंतोमुहुतंमच्छिय पम्मलेस्सां गदो, अण्णलेस्सागमणे संभवाभावा ।

उक्कस्सेण एक्कत्तीसं सागरोवमाणि सादियणिं२ ॥३०१॥

तं जधा- एक्को दव्वलिंगी दव्वसंजममाहप्पेण उवरिमगेवज्जेसु आउअं बंधिय पम्मलेस्साए
अच्छिदस्सं तिस्से अध्दाखएण सुक्कलेस्सा आगदा । तत्थ अंतोमुहुतमच्छिय कालं करिय
उवरिमगेवज्जेसु उववज्जिय सगट्टिदि गमिय चुदो तक्खणे चेव णट्टलेस्सिओ जादो । एवं

पढमिल्लंतोमुहुतेण सादिरेगएक्कतीस सागरोवममेतो मिच्छतसहिदसुक्कलेस्सुक्कस्सकालो
होदि ।

सासणसम्मादिट्ठी ओघत्तं ॥३०२॥

सुक्कलेस्सेति अणुवट्ठे । कुदो ओघत्तं ? गाणाजीवं पडुच्चं जहण्णेण एगो । }

< एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोंका जघन्य काल अन्तर्मुहुर्त है ॥३००॥

जैसे- वर्धमान पद्मलेश्यावाला कोई मिथ्यादृष्टि जीव अपनी लेश्याका काल समाप्त हो जानेसे शुक्ललेश्यावाला हो गया । वह उसमे सर्व जघन्य अन्तर्मुहुर्त काल रह करके पद्मलेश्याको प्राप्त हुआ, क्योंकि, उसका पद्मलेश्याके सिवाय अन्य किसी लेश्यामें जाना संभव ही नहीं है ।

शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंका उत्कृष्ट काल साधिक इकतीस सागरोपम है ॥३०१॥

जैसे- एक द्रव्यलिंगी साधु द्रव्यसंयमके माहात्मसे उपरिम ग्रैवेयकोंमे आयुको बांधकर पद्मलेश्यामें विद्यमान था । उसके उस लेश्याके कालक्षयसे शुक्ललेश्या आ गई । उसमे अन्तर्मुहुर्त काल रह कर, कालको करके उपरिम ग्रैवेयकोंमे उत्पन्न होकर, अपनी स्थितिको बिताकर च्युत हुआ ओर उसी क्षणमें नष्टलेश्यावाला हो गया । इस प्रकार प्रथम अन्तर्मुहुर्त के साथ साधिक इकतीस सागरोपमप्रमाण मिथ्यात्वसहित शुक्ललेश्याका उत्कृष्ट काल होता है ।

शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका काल ओघके समान है ॥३०२॥

यहां पर 'शुक्ललेश्या' इस पदकी अनुवृत्ति होती है ।

समाधान- नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय, और उत्कृष्ट काल >

{ १ एकजीवं प्रति जघन्येनान्तमुहुर्तः । स.सि.१,८.

२ उत्कर्षेणैकत्रिशत्सागरोपमाणि सातिरेकाणि । स .सि.१,८.

३ सासादनसम्यग्दृष्ट्यादिसयोगकेवल्यन्तानां x x सामान्योक्त कालः । स .सि १,८.
}

{ समओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंख्येज्जदिभागो, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण
एगसमओ, उक्कस्सेण छ आवलियाओ, इच्चेदेहि तदो भेदाभावा ।

सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥३०३॥

कुदो ? णाणेगजीवजीवजहण्णुक्कस्सकालेीं सह ओघसम्मामिच्छादिट्ठीहितो भेदाभावा ।

असंजदसम्मादिट्ठी ओघं ॥३०४॥

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च सब्बद्धा, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुतं, उक्कस्सेण तेत्तीसं
सागरोवमाणि सादिरेयाणि, इच्चेदेहि विसेसाभावा । णवरि पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे
अत्थि विसेसो । कुदो ? एत्थ पच्छिमणुससहगद अंतोमुहुत्तेण सादिरेगतुवलंभा । ओघमि
देसूणपुव्वकोडीए सादिरेगतदंसणादो ।

संजदासंजदा पमत-अप्पमतसंजदा केवचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पडुच्च सब्बद्धा १
॥३०५॥

सुगममेदं सुत्तं । }

< पत्योपमका असंख्यातवा भाग है । एक जीवकीअपेक्षा जघन्य काल एक
समय,और उत्कृष्ट काल छह आवलिप्रमाण है । इस प्रकार ओघसे इसके कालमे कोई भेद
नहीं होनेसे ओघपना बन जाता है ।

शुक्ललेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोका काल ओघके समान है ॥३०३॥

क्योकि, नाना जीव और एक जीवसम्बन्धी जघन्य और उत्कृष्ट कालोंके साथ
ओघसम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोसे कोई भेद नहीं है ।

शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका काल ओघके समान है ॥३०४॥

क्योकि, नाना जीवोकी अपेक्षा सर्वकाल है, एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहुर्त है, उत्कृष्ट काल साधिक तेतीस सागरोपम है, इस प्रकारसे कोई विशेषता नहीं है। इतनी विशेषता है कि पर्यायार्थिकनयके अवलम्बन करने पर यहां विशेषता है ।

शंका - यह विशेषता किस कारणसे है ?

समाधान- क्योकि, यहां पर पिछले मनुष्यभवमे होनेवाली शुक्ललेश्याके एक अन्तर्मुहुर्त के साथ उक्त कालकी सातिरेकता पाई जाती है । किन्तु ओघमे देशोन पूर्वकोटीके साथ उक्त कालकी सातिरेकता देखी जाती है ।

शुक्ललेश्यावाले संयतासंयत, प्रमतसंयत और अप्रमतसंयत जीव कितने काल तक होते है ? नाना जीवोकी अपेक्षा सर्वकाल होते है ॥३०५॥

यह सूत्र सुगम है। >

{ १ X X संयतासंयतस्य नानाजीवोपक्षया सर्वःकालः । स .सि.१,८. }

{ एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं १ ॥३०६॥

तं-जधा- एक्को पमत्तसंजदो हायमाणसुक्कलेस्सिगो एगो समओ सुक्कलेस्साए अत्थि ति संजदासंजदो जादो । विदियसमए संजदासंजदो चेव, कित्तु पम्मलेस्संगदो । एसा लेस्सापरावती (१) । सेसगुणट्ठाणेहिंतो सजमासंजमं पडिवज्जंताणं सुक्कलेस्साए एगसमओ ण लब्भदि । कुदो ? वड्ढमाणसुक्कलेस्साए संजमासंजमं पडिवण्णाणं विदियसमए पम्मलेस्साए गमणाभावा । अधवा संजदासंजदो वड्ढमाण पम्मलेस्सिगो तिस्से अध्दाखएण संजमासंजामध्दाए एगो समओ अत्थि ति सुक्कलेस्सिओ जादो । विदियसमए सुक्कलेस्सिओ चेव, किन्तु अप्पमत्तभावेण संजमं पडिवण्णो । एसा गुणपरावती (२) ।

पमत्तस्स उच्चदे -एक्को अप्पमत्तो हायमाणसुक्कलेस्सिगो सुक्कलेस्सध्दाए एगो समओ अत्थि ति पमत्तो जादो । विदियसमए पमतो चेव,किंतु पम्मलेस्सा परावत्तिदा । एसा लेस्सापरावत्ती (१) । अधवा एक्को वड्ढमाणपम्मलेस्सिगो पम्मलेस्सध्दाए खएण सुक्कलेस्सिगो जादो । विदियसमए सुक्कलेस्सिगो चेव, किंतु }

< एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोंका जघन्य काल एक समय है ॥३०६॥

जैसे-हायमान शुक्ललेश्यावाला एक प्रमत्तसंयत जीव, शुक्ललेश्याके कालमे एक समय शेष रहने पर संयतासंयत हुआ । द्वितीय समयमे वह संयतासंयत ही है, किन्तु पद्यलेश्याको प्राप्त हो गया । यह लेश्याका एक समयसम्बन्धी परिवर्तन है (१) । शेष गुणस्थानोसे संयमासंयमको प्राप्त होनेवाले जीवोके शुक्ललेश्याका एक समय नहीं पाया जाता है, क्योंकि, वर्धमान शुक्ललेश्याके साथ संयमासंयमको प्राप्त होनेवाले जीवोके द्वितीय समयमे पद्यलेश्यामे गमनका अभाव है । अथवा कोई संयतासंयत वर्धमान पद्यलेश्यावाला है । उस लेश्याके कालक्षयसे और संयमासंयमके कालमे एक समय अवशेष रहने पर वह शुक्ललेश्यावाला हो गया । द्वितीय समयमे वह शुक्ललेश्यावाला ही है, किन्तु अप्रमत्तभावके साथ संयमको प्राप्त हुआ । यह गुणस्थानपरिवर्तनसम्बन्धी एक समयकी प्ररुपण है (२) ।

अब अप्रमत्तसंयमतके एक समयकी प्ररुपणा करते हैं- हायमान शुक्ललेश्यावाला कोई एक अप्रमत्तसंयत शुक्ललेश्याके कालमे एक समय अवशेष रहनेपर प्रमत्तसंयत हो गया। द्वितीय समयमें वह प्रमत्तसंयत ही रहा; किन्तु पद्यलेश्या लौट आई । यह लेश्यापरिवर्तनसम्बन्धी एक समयकी प्ररुपणा हुई (१) । अथवा, वर्धमान पद्यलेश्यावाला कोई एक प्रमत्तसंयत जीव, पद्यलेश्याके कालक्षयसे शुक्ललेश्यावाला हो गया । द्वितीय समयमें वह (शुक्ललेश्यावाला) ही >

{ १ एकजीवं प्रति जघन्येनैकः समयः। स.सि.१,८. }

{ अप्पमततो जादो । एसा गुणपरावती (२) । अधवा अप्पमततो हायमाणसुक्कलेस्सिगो सुक्कलेस्सध्दाए सह पमतौ जादो । विदियसमए मदो देवतं गदो (३) ।

अप्पमतस्स उच्चदे- एक्को पमतौ सुक्कलेस्साए अच्छिदो, सुक्कलेस्साए सह अप्पमततो जादो । विदियसमए मदो देवतं गदो (१) । अधवा अपुव्वकरणो ओदरंतो सुक्कलेस्सिगो अप्पमतौ होदूण मदो देवो जादो (२) । एत्थ एगसमय भंगपरुवणगाहा-
दो द्यो य तिण्णि तिया होति पम्मलेस्साए ।

दो तिग दुगं च समया बोध्दव्वा सुक्कलेस्साए ॥४१॥

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं १ ॥ ३०७॥

कुदो ? सुक्कलेस्साए परिणमिय उक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिय पम्मलेस्सं गदाणमुक्कस्सकालुवलंभा । }

< है, किन्तु अप्रमत्तसंयत हो गया । यह गुणस्थानसम्बन्धी परिवर्तन है (२) । अथवा, हायमान शुक्ललेश्यावाला कोई अप्रमत्तसंयत, शुक्ललेश्याके ही कालके साथ प्रमत्तसंयत हो गया । पुनः दूसरे समयमे मरा और देवत्वको प्राप्त हुआ (३)।

अब अप्रमत्तसंयतके एक समयकी प्ररुपणा करते है -शुक्ललेश्यामें विद्यमान कोई एक प्रमत्तसंयत जीव शुक्ललेश्याके साथ ही अप्रमत्तसंयत हो गया । वह द्वितीय समयमे मरा और देवत्वको प्राप्त हुआ (१) । अथवा शुक्ललेश्यावाला श्रेणीसे उतरता हुआ कोई अपूर्वकरणसंयत अप्रमत्तसंयत होकर मरा और देव हो गया (२) ।

यहां पर एक सयमके भंगोकी प्ररुपणा करनेवाली गाथा इस प्रकार है -

तेजोलेश्याके दो, दो और तीन समयभंग होते है । पद्यलेश्याके तीन त्रिक अर्थात् तीन, तीन और तीन समयभंग होते है । तथा, शुक्ललेश्याके दो, तीन और दो समयभंग होते है, ऐसा जानना चाहिए ॥४१॥

विशेषार्थ- ऊपर जो एकसमयसम्बन्धी अनेक विकल्प बताये गये हैं, उनका स्पष्टीकरण इस प्रकार है- तेजोलेश्यासम्बन्धी देशसंयतके दो भंग प्रमत्तसंयतके दो भंग, और अप्रमत्तसंयतके तीन भंग, इस प्रकार कुल (२+२+३=७) सात भंग होते हैं। पद्यलेश्यासम्बन्धी देशसंयतके तीन भंग, प्रमत्तसंयतके तीन भंग और प्रमत्तसंयतके तीन भंग, इस प्रकार कुल (३+३+३=९) नौ भंग होते हैं। शुक्ललेश्यासम्बन्धी देशसंयतके दो भंग, प्रमत्तसंयतके तीन भंग अप्रमत्तसंयतके दो भंग, इस प्रकार कुल (२+३+२=७) सात भंग जानना चाहिए।

उक्त तीनो गुणस्थानोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहुर्त है ॥३०७॥

क्योकि, शुक्ललेश्यासे परिणत होकर उत्कृष्ट अन्तर्मुहुर्त रह कर पद्यलेश्याको प्राप्त हुए जीवोके उत्कृष्ट काल पाया जाता है। >

{ १ उत्कर्षेणान्तर्मुहुर्तः । स.सि.१,८. }

{ चदूणहमुवसा चदुणहं खवगा सजोगिकेवली ओघं ॥३०८॥

कुदो ? एदेसिमोघे वि सुक्कलेस्सं मोत्तूण अण्णलेस्साभावा ।

एवं लेस्सामग्गणा समता ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छादिद्वी केवचिरं कालादो होति,णाणाजीवं पडुच्चं सब्बद्धा१
॥३०९॥

सुगममेदं सुतं ।

एगजीवं पडुच्च अणादिओ सपज्जवसिदो सादिओ सपज्जवसिदो२ ॥३१०॥

तं जहा- भवियत्तं दुविहं, अणादिसपज्जवसिदं सादिसपज्जवसिदमिदि ।
पुव्वमलध्दसम्मतरस्स अणादिसपज्जसिदं । सम्मतं लहिऊणमिच्छंति गदस्स सादिसज्जवसिदं ।
अणादित्तादो अकाट्टिमस्स ण विणासो चे ण, अण्णाणस्स कम्मबंधस्सं य }

< शुक्ललेश्यावाले चारों उपशामक, चारो क्षपक और सयोगिकेवलीका काल ओघके समान है ॥३०८॥

क्योकि, इन गुणस्थानवालोके ओघमे भी शुक्ललेश्याको छोडकर अन्य लेश्याका अभाव है ।

इस प्रकार लेश्यामार्गणा समाप्त हुई ।

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिद्धिक जीवोमे मिथ्यादृष्टि जीव कितने काल तक होते है ? नाना जीवोकी अपेक्षा सर्वकाल होते है ॥३०९॥

यह सूत्र सुगम है ।

एक जीवकी अपेक्षा अनादि-सान्त और सादि सान्त काल है ॥३१०॥

जैसे- भव्यत्व दो प्रकारका है अनादि-सान्त और सादि-सान्त । पूर्वमे नही प्राप्त हुआ है सम्यक्त्व जिसको ऐसे जीवके अनादि-सान्त भव्यत्व होता है । सम्यक्त्वको प्राप्त करके मिथ्यात्वको गयो हुए जीवके सादि-सान्त भव्यत्व होता है ।

शंका- जो वस्तु अनादि है, वह अकृत्रिम होती है और उसका विनाश नही होता । (इसलिए मिथ्यात्वको अनादि होनेसे अकृत्रिम सिद्ध है, फिर उसका विनाश नही होना चाहिए ?)

समाधान- नही, क्योकि, अज्ञानका और कर्मबन्धका उनके अनादि होते हुए भी, >

{ १ भव्यानुवादेन भव्येषु मिथ्यादृष्टेर्नानाजीवापेक्षया सर्वःकालः । स.सि.१,८.

२ एकजीवापेक्षया द्वौ भंगो, अनादि सपर्यवसानः सदिः सपर्यवसानश्च । स सि १,८ }

{ अणादिस्स वि विणासुवलंभा । अकारणतादो ण तस्स विणासो चे ण, अणादिबंधन बद्धकम्मकारणत्तादो । सिद्धाणं मिच्छत्तासंजमकसायजोगकम्मासवविरहियाणं ण संसारे पदणमत्थि, तदो ण भवियतं । ण पडिवण्णसम्मत्तस्सं वि सादि भवयत्तं होदि, पुब्बं पि तत्थ

भवियतुवलंभा ? एत्थ परिहारो वुच्चदे - ण संसारे णिवदिदसिध्दे अस्सिदूण भवियतं सादि उच्चदे । ण च ते संसारे णिवदंति, णट्टासवत्तादो । कित्तु गहिदसम्मत्तजीवस्स भवियतं सादि उच्चदे । ण च तं पुव्वमत्थि, सादिसांतस्सेदस्स पुव्विल्लेण अणादि-अणंतेण सह एयत्तविरोहा । पुव्विलमवि भवियतं सांतं चे ण, सतिं पडुच्चं तस्स सांततुवएसा । ण वतिं पडुच्च सम्मतगहणेण विणा अणंतसंसारस्स जीवस्स सांतं भवियतं, विरोहा । अणादि-अणंतेण वि भवियत्तेण होदव्वं, अण्णहा भव्वजीववोच्छेदप्पसंगाहो ।

अत्थि अणंता जीवा जेहि ण पत्तो तसाण परिणामो ।

भावकलंककपउरा णिगोदवासं ण मुंचंति १ ॥४२॥ }

< विनाश पाया जाता है ।

शंका__ कारणहित वस्तुका विनाश नहीं होता है, इसलिए अज्ञान या कर्मबन्धका भी विनाश नहीं होना चाहिए?

समाधान_ नहीं, क्योंकि, अज्ञान या कर्मबन्धका कारण अनादिबन्धनबद्ध कर्म ही है ।

शंका__ मिथ्यात्व, असयंम, कषाय और योगके द्वारा कर्मास्त्रवसे विरहित सिद्ध जीवोका पुनः संसारमे पतन नहीं होता है, इसलिए भव्यत्व सादि-सान्त नहीं है । और न प्रतिपन्नसम्यक्त्वी जीवके भी भव्यत्व सादि होता है, क्योंकि, सम्यक्त्वकी प्राप्तिके पूर्व भी उस जीवमे भव्यत्व पाया जाता है ?

समाधान__ अब उक्त आशंकाका परिहार कहते हैं- संसारमे पुनः लौटकर आनेवाले सिद्ध जीवोकी अपेक्षासे भव्यत्वको सादि नहीं कह सकते, क्योंकि, कर्मास्त्रवोके नष्ट हो जानेसे वे संसारमे पुनः लौटकर नहीं आते । किन्तु ग्रहण किया है सम्यक्त्वको जिसने, ऐसे जीवके भव्यत्वको सादि कहते हैं; तथा वह पूर्वमे भी नहीं है, क्योंकि, इस सादि-सान्त भव्यत्वके पूर्ववर्ती उस अनादि -अनन्त भव्यत्वके साथ एकत्वका विरोध है ।

शंका__ पहलेके भव्यत्वको भी यदि सान्त मान लिया जाय, तो क्या हानि है ?

समाधान__ नहीं, क्योंकि, शक्तिकी अपेक्षासे उसके सान्तताका उपदेश किया गया है। व्यक्तिकी अपेक्षा सम्यक्त्वग्रहणके विना अनन्त संसारी जीवके सान्त भव्यत्व नहीं माना जा सकता, क्योंकि, ऐसा माननेमे विरोध आता है। अर्थात फिर तो भव्यत्वकी अनादि-अनन्त भी होना पडेगा, अन्यथा भव्य जीवोके विच्छेदका प्रसंग प्राप्त होगा। तथा __

ऐसे अनन्तानन्त जीव है जिन्होने त्रसोंकी पर्याय अभी तक नहीं पाई है, और जो दूषित भावोकी अति प्रचुरताके कारण कभी निगोदके वासको नहीं छोडते है ॥४२॥ >

{ १ गो.जी. १९७. }

{ एयणिगोदसरीरे जीवा दव्वप्पमाणदो दिट्ठा ।

सिध्देहि अणंतगुणा सव्वेण वितीदकालेण १ ॥४३॥

इच्चादिसुत्तदंसणादो य । ण च मोक्खमगच्छंताणं भवियतं णत्थि ति वोतुं जुतं, मोक्खगमणसतिसब्भावं पडुच्च तेसि भवियतुवदेसा२ (३) । ण च सत्तिमंताणं सव्वेसि पि वत्तीए होदव्वमिदि णियमो अत्थि सव्वस्स वि हेमपासाणस्सं हेमपज्जाएण परिणमणप्पंगा३ । ण च एवं, अणुवलंभा । णिव्वुइं गच्छमाणो वि ण वोच्छिज्जदि भव्वरासि ति कधमेदं णव्वदे ? तस्साणंतियादो । सो रासी अणंतो उच्चइ, जो संते वि वए ण णिट्ठादि, अण्णहा अणंतववएसो असत्थओ होज्ज । तम्हा तिविहेण भवियतेण होदव्वमिदि । ण च सुत्तेण सह विरोहो, सत्ति पडुच्च सुत्ते अणादिसांततुवएसो ।

जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स इमो णिट्ठेसो४ ॥३११॥ }

< एक निगोदशरीरमे द्रव्यप्रमाणसे जीव सिध्दोंसे तथा समस्त कालके समयोसे अनन्तगुणे देखे गये है ॥४३॥

इत्यादि सूत्रोंके देखे जानेसे भी भव्य जीवोंके विच्छेदका अभाव सिद्ध है। तथा, मोक्षको नहीं जानेवाले जीवोंके भव्यपना नहीं होता है, ऐसा भी कहना युक्त नहीं है, क्योंकि, मोक्षगमनकी शक्तिके सद्भावकी अपेक्षा उनके भव्यत्वके पाये जानेका उपदेश है। तथा यह भी कोई नियम नहीं है कि भव्यत्वकी शक्ति रखनेवाले सभी जीवोंके उसकी व्यक्ति होना ही चाहिए, अन्यथा, सभी स्वर्णपाषाणके स्वर्णपर्यायसे परिणमनका प्रसंग प्राप्त होगा किन्तु इस प्रकारसे देखा नहीं जाता है।

शंका__ निर्वृति (मोक्ष) को जानेके कारण नित्यव्ययात्मक भव्यराशि विच्छेदको प्राप्त नहीं होगा, यह कैसे जाना ?

समाधान__ क्योंकि, वह राशि अनन्त है। और वही राशि अनन्त कही जाती है, जो व्ययके होते रहने पर भी समाप्त नहीं होती है। अन्यथा, फिर उस राशिकी अनन्त संज्ञा अनर्थक हो जायेगी। इसलिए भव्यत्व तीन प्रकारका ही होना चाहिए। तथा सूत्रके साथ भी कोई विरोध नहीं आता है, क्योंकि, शक्तिकी अपेक्षा सूत्रमें भव्यत्वके अनादिसान्तताका उपदेश दिया गया है।

उक्त तीन प्रकारोंमेंसे जो भव्यत्व सादि और सान्त है उसका निर्देश इस प्रकार है
॥३११॥ >

{ १ गो.जी. १९६

२ अ प्रतौ भवियतुवलंभदेसा इति पाठः । }

{ १ भव्यतणस्स जोग्गा जे जीवा ते हवन्ति भवसिद्धा । ण हु मलविगमे णियमा ताणं कणओवलामिव ।

गो.जी. ५५८ ४ तत्र सादिः सपर्यवसानो जघन्येनान्तर्मुहुर्तः । स.सि. १,८

तिण्हं भवियाणं मज्जे जो सादिसपज्जवसिदो भविओ तस्स इमो णिद्येसो परुवणा पणवणा ति उत्तं होदि । अधवा भवियाणं जं मिच्छतं दुविहं, अणादिस पज्जवसिदं सादिसपज्जवसिमिदि । तत्थ जो सो सादिओ सपज्जवसिदो मिच्छादिट्ठी तस्सं इमो णिद्येसो ति वतव्वं । पुव्विल्लमिह पुण अत्थो जो सादिओ सपज्जवसिदो भविओ तस्स मिच्छतस्सं इमो णिद्येसो परुवेदव्वो ।

जहण्णेण अंतोमुहुतं ॥३१२॥

तं जधा- सम्मादिट्ठी दिट्ठमग्गो मिच्छतं गंतूण सव्वजहण्णमंतोमुहुतंमच्छिय अण्णगुणं गदो।
उक्कस्सेण अध्दपोग्गलपरियट्ठं देसूणं१ ॥३१३॥

तं जहा- एक्को अणादियमिच्छादिट्ठी तिण्णिण करणाणि करियं सम्मतं पडिवण्णो । तेण सम्मतेण उप्पज्जमाणेण अणंतो संसारो छिण्णो संतो अध्दपोग्गल परियट्ठमेतो कदो२ । उवसमसम्मतेण सव्वजहण्णमंतोमुहुतमच्छिय उवसमसम्मतध्दाए छावलियसेसाए आसाणं गंतूण मिच्छंति णंदव्वो । अहवा उवसमसम्मादिट्ठी चेव }

< तीन प्रकारके भव्योके मध्यमे जो सादि-सान्त भव्य है, उसका यह निर्देश है, अर्थात् उसकी यह प्ररुपणा या प्रज्ञापना की जाती है । अथवा, भव्य जीवोके जो मिथ्यात्व है, वह दो प्रकारका होता है-(१)अनादि-सान्त, और (२)सादि-सान्त । उनमेसे जो सादि और सान्त मिथ्यादृष्टि है, उसका यह निर्देश है, ऐसा कहना चाहिए । तथा पहलेके अर्थमे जो सादि-सान्त भव्य कहा है, उसके मिथ्यात्वका यह निर्देश है, ऐसी प्ररुपणा करनी चाहिए ।

सादि-सान्त मिथ्यात्वका जघन्य काल अन्तमुहुत है ॥३१२॥

जैसे - दृष्टिमार्गी कोई सम्यग्दृष्टि जीव मिथ्यात्वको प्राप्त होकर सर्वजघन्य अन्तमुहुत काल रह करके अन्य गुणस्थानको चला गया ।

सादि-सान्त मिथ्यात्वका उत्कृष्ट काल देशोन अर्धपुदगलपरिवर्तन है ॥३१३॥

जैसे-कोई एक अनादि मिथ्यादृष्टि जीव तीनों करणोको करके सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ । उत्पन्न होनेके साथ ही उस सम्यक्त्वसे अनन्त संसार छिन्न होता हुआ अर्धपुदगलपरिवर्तन कालमात्र कर दिया गया । उपशमसम्यक्त्वके कालमे छह आवलिया शेष रह जाने पर उसी

जीवको सासादनगुणस्थानमे ले जाकर मिथ्यात्वमें ले जाना चाहिए । अथवा, उपशमसम्यग्दृष्टि जीव ही मिथ्यात्वको जाकर देशोन अर्धपुदगलपरिवर्तन काल मिथ्यात्वके साथ परिभ्रमण करके

>

{ १ उत्कर्षेणार्धपुदगलपरिवर्तो देशोनः । स.सि. १,८
२ प्रतिषु कुदो इति पाठः । }

{ मिच्छतं गंतूण अध्दपोग्गलपरियट्टं देसूण मिच्छतेण परियट्टिय अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे सम्मतं घेतूण अणंताणुबंधी विसंजोइय विस्समिय दंसणमोहं खविय पमता-पमतपरावतसहस्सं करिय अधापमतकरणं कारुण अपुव्वो अणियट्टी सुहुमो खीणे सजोगी होदूण सिध्दो जादो । जावं देसूणमध्दपोग्गलपरियट्टं ।

सासणसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेव्वली ति ओघं१ ॥३१४॥

कुदो ? अव्वयत्तादो ।

एगजीवं पडुच्च अणादिओ अपज्जवसिदो२ ॥३१६॥

कुदो ? मिच्छतं मोतूण तस्स गुणंतरगमणभावा ।

एवं भवियमग्गणा समत्ता । }

< अन्तर्मुहुर्तमात्र संसारके शेष रहने पर सम्यक्त्वको ग्रहण करके पुनः अनन्तानुबन्धी कषायका विसंयोजन करके पश्चात विश्राम ले, दर्शनमोहको क्षपक कर, प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थान सम्बन्धी सहस्त्रो परिवर्तनको करके अधः प्रवृत्तकरण कर, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण सूक्ष्मसाम्पराय, क्षीणकषाय, सयोगी और अयोगी हो करके सिध्द हो गया । इस प्रकारसे देशोन अर्धपुदगलपरिवर्तन काल सिध्द हुआ ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली तकका काल ओघके समान है

॥३१४॥

क्योकि, सासादनादि गुणस्थानवर्ती जीवोके भव्यत्वको छोडकर अन्यका होना, अर्थात अभव्यपना, असंभव है ।

अभव्यसिद्ध जीव कितने काल तक होते है ? नाना जीवोकी अपेक्षा सर्वकाल होते है

॥३१५॥

क्योकि, अभव्य जीवोका व्यय ही नही होता ।

एक जीवकी अपेक्षा अभव्योका अनादि और अनन्त काल है ॥३१६॥

क्योकि, मिथ्यात्वको छोडकर अभव्यके अन्य गुणस्थानमे जानेका अभाव है ।

इस प्रकार भव्यमार्गणा समाप्त हुई । >

{ १ सासादनसम्यग्दृष्ट्याद्ययोगिकेवल्यन्तानां सामान्योक्तः कालः। स सि १,८
२ अभव्यानामद्यपर्यवसानः । स.सि.१,८ }

{ सम्मताणुवादेण सम्मादिट्टि-खइयसम्मादिट्टीसु असंजदसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव
अजोगिकेवली ति ओघं १ ॥३१७॥

कुदो ? सव्वगुणट्टाणाणमप्पणो णाणेगजीवजहण्णुक्कस्सकाले अस्सिदूण भेदाभावा । णवरि
खइयसम्मादिट्टि- संजदासंजदेसु अत्थि भेदो । त भणिस्सामो । ण चेसो भेदो सुतेण अपरुविदो
सगंहिदविसेससामण्णमवलंबिय ओघमिदि णिद्येसादो । त जहा- एगोदेवो णेरइओ वा सम्मादिट्टी
मणुसेसुवज्जिय अंतोमुहुतेण दंसणमोहणीयं खविय खइयसम्मादिठी जादो । चहुहि अंतोमुहुतेहि अब्भहिय
अट्टवस्सेहि ऊणियं पुव्वकोडिसंजमासंजमणुपालिय मदो देवो जादो । एत्थेव विसेसो, णत्थि अण्णत्थ कत्थ
वि ।

वेदगसम्मादिट्टीसु असंजदसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा ति ओघं २ ॥३१८॥

कुदो? णाणेगजीवजहण्णुक्कस्सकालेहि सव्वगुणद्वाणाणं ओघगुणद्वाणेहिंतो भेदाभावा ।
}

< सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टि ओर क्षायिकसम्यग्दृष्टियोमे असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकका काल ओघके समान है
॥३१७॥

क्योकि, चौथे गुणस्थानसे लेकर ऊपरके सभी गुणस्थानोका अपने अपने नाना जीव और एक जीवके जघन्य ओर उत्कृष्ट कालका आश्रय करके सम्यग्दृष्टी जीवोके साथ कोई भेद नहीं है । विशेष बात यह है कि, क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोके कालमे भेद है, उसे कहते है । यह कहा जानेवाला भेद सूत्रके द्वारा न कहा गया हो, ऐसी बात नहीं है, क्योकि, सगृहित है विशेष जिसमे ऐसे सामान्य विषयक द्रव्यार्थिकनयका अवलम्बन करके 'ओघ' ऐसा पद सूत्रमे निर्दिष्ट किया गया है । अब उक्त कालका स्पष्टीकरण करते है - कोई एक देव, अथवा नारकी सम्यग्दृष्टि जीव मनुष्योमें उत्पन्न होकर और अन्तमुहुर्त अधिक गर्भको आदि लेकर आठ वर्षे बिताकर, समयमासयंमको प्राप्त होकर और अन्तमुहुर्त विश्राम करके एक अन्तमुहुर्त दर्शनमोहनीयका क्षपण कर क्षायिकसम्यग्दृष्टि हो गया । इन चार अन्तमुहुर्तोसे अधिक आठ वर्षोसे कम पूर्वकोटि वर्षेप्रमाण संयमासंयमको परिपालन करके मरा और देव हुआ । यहां पर ही इतनी विशेषता है और कही कुछ भी विशेषता नहीं है ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोमे असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमतसंयत गुणस्थान तकका काल ओघके समान है ॥३१८॥

क्योकि, नाना जीव और एक जीवसम्बन्धी जघन्य और उत्कृष्ट कालोकी अपेक्षा सूत्रोक्त सर्व गुणस्थानोके कालका ओघ गुणस्थानोके कालसे कोई भेद नहीं है । >

{ १ सम्यक्त्वानवादेन क्षायिकसम्यग्दृष्टिनामसंयतसम्यग्दृष्टय द्ययोगकेवल्यन्तानां सामान्योक्तः कालः । स सि १,८

२ क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टीनां चतुर्णां सामान्योक्तः कालः । स सि १,८ }

{ उवसमसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदा केचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुतं १ ॥३१९॥

तं जहा- सतट्ठ जणा बहुआ वा मिच्छादिट्ठिणो उवसमसम्मतं पडिवण्णा ।
उवसमसम्मतद्वाए छावलियसेसाए सव्वे आसाणं गदा । अंतरं जादं ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो २ ॥३२०॥

तं जहा_ सतट्ठ जणा बहुआ वा मिच्छादिट्ठिणो उवसमसम्मतं पडिवण्णा । तत्थ अंतोमुहुतमच्छिय वेदगसम्मतं सम्मामिच्छंतं सासणसम्मतं मिच्छंत वा गदा । एदस्स एगा सलागा णिक्खविदव्वा । तस्समए चव अण्णे मिच्छादिट्ठिणो उवसमसम्मतं पडिवज्जिय तत्थ अंतोमुहुतमच्छिय चदूण्हं गुणट्ठाणणमणदरं गदा । विदियसलागा लद्धा होदि । एवं तिण्णि चत्तारि आदि गंतूण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेताओ सलागाओ लब्भति । तं कधं णव्वदे? आइरियपरंपराग दुवदेसादो । एदादि सलागाहि उवसमसम्मतद्धं गुणिदे सगरासीदे असंखेज्जगुणो अणंतरकालो होदि । }

< उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोमे असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीव कितने काल तक होते हैं? नाना जीवोकी अपेक्षा जघन्यसे अन्तमुहुत काल होते हैं ॥३१९॥

जैसे- सात आठ जन, या बहुतसे मिथ्यादृष्टि जीव उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हुए, और उपशमसम्यक्त्वके कालमे छह आवलीप्रमाण कालके अवशिष्ट रहने पर सभीके सभी सासादनगुणस्थानोको प्राप्त हो गये और पुनः अन्तरको प्राप्त हुए ।

उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत और संयतासंयतोका नाना जीवोकी अपेक्षा उत्कृष्ट काल पत्योपमके असंख्यातवे भाग है ॥३२०॥

जैसे- सात आठ जन, अथवा बहुतसे मिथ्यादृष्टि जीव उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हुए। उसमे अन्तमुहुत रह करके वे सब वेदकसम्यक्त्वको या सम्यग्मिथ्यात्वको या सासादनसम्यक्त्वको अथवा मिथ्यात्वको प्राप्त हुए। इसकी एक शलाका स्थापित करना चाहिए। उसी समयमे अन्य भी मिथ्यादृष्टि जीव उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त होकर उसमे अन्तमुहुत रह कर पूर्वोक्त चार गुणस्थानोमेसे किसी एक गुणस्थानको प्राप्त हुए । यह दूसरी शलाकाए प्राप्त होती है ।

शंका- यह कैसे जाना जाता है कि उपशमसम्यक्त्वकी शलाकाएं पलोपमके असंख्यातवे भागमात्र होती हे ?

समाधान- आचार्य परंपरागत उपदेशसे यह जाना जाता है ।

इन लब्ध शलाकाओसे उपशमसम्यक्त्वके कालको गुणा करने पर अपनी राशिसे असंख्यातगुणा अन्तररहित उपशमसम्यक्त्वका काल होता है । >

{ १ औपशमिकसम्यक्त्वेषु असंयतसम्यग्दृष्टिसंयतासयतोयोर्नाजीवापेक्ष्या
जघन्यनान्तर्मुहुर्तः । स सि १,८
२ उत्कर्षेण पल्योपमासंख्येयभागः । स सि १,८ }

{ एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुतं १ ॥३२१॥
तं जहा- एक्को मिच्छादिद्वी उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो, अवरो देससजमेण सह तं चेव पडिवण्णो,
सव्वजहण्णमद्धमच्छिय उवसमसम्मत्तद्धाए छावजियावसेसाए आसाणं गदा । एसो दोण्हं पि जहण्णाकालो ।
उक्कस्सेण अंतोमुहुतं १ ॥३२२॥

तं जहा- पमत अप्पमताणं ताव उच्चदे । सतट्ट जणा बहुआ वा उवसम सम्मादिट्टिणो
उवसमसेढीदो ओदरिय पमतापमता होदूण एगसमयमच्छिय कालं करिय देवा जादा ।
अपुव्वकरणस्स ओदरमाणेहि अणियट्टि- सुहुमसापराइयाणं चढणोयरणकिरियावावदेहि, उवसंतस्स
चढतेहि अप्पिगुणपडिवण्णविदियसमए ३ मदेहि जीवोहि एगसमओ वतव्वो । }

< एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोका जघन्य काल अन्तमुहुर्त है ॥३२१॥

जैसे - एक मिथ्यादृष्टि जीव उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ । दूसरा देशसंयमके साथ
उसी उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ । दोनो ही जीव सर्वजघन्य काल अपने अपने गुणस्थानमे रह
करके उपशमसम्यक्त्वके कालमे छह आवलिया अवंशेष रह जाने पर सासादनगुणस्थानको प्राप्त
हुए । यह दोनो गुणस्थानोका जघन्य काल है ।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोका उत्कृष्ट काल अन्तमुहुर्त है ॥३२२॥

जैसे- दो मिथ्यादृष्टि जीव है । उनमेसे एक उपशमसम्यक्त्वको और दूसरा देशसंयमको प्राप्त हुआ । वहां वे दोनो ही जीव सर्वोत्कृष्ट अन्तमुहुर्तकाल रह करके सम्यग्मिथ्यात्व, मिथ्यात्व, अथवा वेदकसम्यक्त्व, इन तीनोमेसे किसी एकको प्राप्त हुए ।

प्रमत्तसंयतसे लेकर उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक उपशम सम्यग्दृष्टि जीव कितने काल तक होते हैं ? नाना जीवोकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय होते हैं ॥३२३॥

वह इस प्रकारहै -उनमेसे पहले प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोकि एक समयकी प्ररुपणा करते हैं- सात आठ जन अथवा बहुतसे उपशमसम्यग्दृष्टि जीव, उपशमश्रेणीसे उतर कर प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत होकर वहां पर एक समय रह करके मरण कर देव हुए । अपूर्वकरण गुणस्थानवोले उतरते हुए अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानवालोके आरोहण और अवतरण इन दोनो ही क्रियाओमे लगेहूए तथा उपशान्तकषायके चढते हुए विवक्षित गुणस्थानको प्राप्त होकर द्वितीय समयमे मरे हुए जीवोके द्वारा एक समयकी प्ररुपणा करनी चाहिए । >

{ १ एकजीवं प्रति जघन्यश्चोत्कृष्टश्चान्तमुहर्तः । स सि १,८
२ प्रमताप्रमतयोश्चतुर्णामुपशमकानां च नानाजीवापेक्षया एकजीपेक्षया च जघन्येनैकः समयः। स सि १,८
३ प्रतिषु अपिदगुणपडिवण्णं इति पाठः । }

{ उक्कस्सेण अंतोमुहुतं १ ॥३२४॥
पमतापमताणं ताव उच्चदे _ सतट्ट जणा बहुआ वा दंसणमोहणीयउवसामगा चारितमोहणीयउवसामगा वा पमतापमतगुणे पडिवण्णा । तेसु अंतोमुहुतद्धमच्छिय अण्णगुणे गदा । तम्हि चवे समए अण्णे उवसमसम्मदिट्ठिणो पमतापमतगुणे पडिवण्णा । एवमेत्थ संखेज्जसलागा लब्भंति । एदाहि
पमतापमतद्धं गुणिदे वि अंतोमुहुतं चेव होदि । कुदो ? अंतोमुहुतमिदि सुते उच्चिड्ढतादो । एवं चेव चदुण्हं मुवसामगाणं वि वत्तव्वं ।
एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥३२५॥
उक्कस्सेण अंतोमुहुतं ॥३२६॥

एदाणि दो वि सुताणि सुगमणि, णाणाजीवजहण्णुक्कस्सकालपरुवणाए परुविदतादो
सासणसम्मादिट्ठी ओघं २ ॥३२७॥
सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं २ ॥३२८॥
मिच्छादिट्ठी ओघं २ ॥३२९॥ }

< उक्त गुणस्थानवर्ती उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोका उत्कृष्ट काल अन्तमुहुर्त है ॥३२४॥
उनमेसे पहले प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोका काल कहते है _ सात आठ जीव अथवा
बहुतसे जीव, चाहे वे दर्शनमोहनीयकर्मके उपशामक हो, अथवा चाहे चारित्रमोहनीयकर्मके
उपशमन करनेवाले हो, प्रमत्त और अप्रमत्तगुणस्थानको प्राप्त हुए । उन दोनो गुणस्थानोमे
अन्तमुहुर्त काल रह करके अन्य गुणस्थानको प्राप्त हुए । उसी समयमे अन्य भी
उपशमसम्यग्दृष्टि जीव प्रमत्त ओर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानको प्राप्त हुए । इस प्रकारसे यहां पर
संख्यात शलाकाएं प्राप्त होती है । इन शलाकोओसे प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयतके कालको
गुणा करने पर भी अन्तमुहुर्त ही होता है, क्योकि, सूत्रमे अन्तमुहुर्त ऐसापद कहा गया है । इसी
प्रकारसे चारो उपशामकोका भी काल कहना चाहिए ।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोका जघन्य काल एक समय है ॥३२५॥

उक्त जीवोका उत्कृष्ट काल अन्तमुहुर्त है ॥३२६॥

ये दोनो हीसूत्र सुगम है क्योकि, इनका अर्थ नाना जीवोके जघन्य और उत्कृष्ट
कालकी प्ररुपणामे प्ररुपण किया जा चुका है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोका काल ओघके समान है ॥३२७॥

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोका काल ओघके समान है ॥३२८॥

मिथ्यादृष्टि जीवोका काल ओघके समान है ॥३२९॥ >

{ १ उत्कर्षेणान्तमुहुर्तः । स सि १,८
२ सासादनसम्यग्दृष्टि-सम्यग्मिथ्यादृष्टि मिथ्यादृष्टिीनपा सामान्योक्तः। स सि १,८ }

{ ओघमिह उतसासणादीणं सम्मताणुवादमिह उतसासणादितिण्हं गुणट्टाणाणं च भेदाभावा।

एवं समतमग्गणा समता ।

सण्णियाणुवादेन सण्णीसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पडुच्चं सब्बद्धां १

॥३३०॥

सुगममेदं सुतं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुतं ॥३३१॥

एदं पि सुतं सुगम चेय, बहुसो परुविदत्तादो ।

उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधतं ॥३३२॥

तं जधा- एगो असण्णी सण्णीसु उववण्णो सागरोवमसदपुधतं तत्थेव भमिय पुणो असण्णितं गदो ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागच्छदुमत्था ति ओघं २ ॥३३३॥ }

< ओघमें कहे गये सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तीन गुणस्थानोकी कालप्ररुपणाका और सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादमे कहे गये सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तीन गुणस्थानोकी कालप्ररुपणाका परस्परमे कोई भेद नहीं है ।

इस प्रकार सम्यक्त्वमार्गणा समाप्त हुई ।

संज्ञामार्गणाके अनुवादसे संज्ञी जीवोमे मिथ्यादृष्टि जीव कितने काल तक होते हे? नाना जीवोकी अपेक्षा सर्व काल होते है ॥३३०॥

यह सूत्र सुगम है ।

एक जीवकी अपेक्षा संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोका जघन्य काल अन्तमुहुतं है ॥३३१॥

यह सूत्र भी सुगम ही है, क्योकि पहले बहुत बार प्ररुपण किया जा चुका है ।

एक जीवकी अपेक्षा संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोका उत्कृष्ट काल सागरोपमशतपृथक्त्व है ॥३३२॥

जेसे- कोई एक असंज्ञी जीव संज्ञियोमे उत्पन्न हुआ ओर सागरोपशतपृथक्त्वके अन्त तक वह संज्ञियोमे ही भ्रमण करके पुनः असंज्ञित्वकी प्राप्त हुआ ।

सासादनसम्यग्दृष्टिसे लेकर क्षीणकषायवीतरागच्छन्नस्थ गुणस्थान तक संज्ञियोकी कालप्ररुपणा ओघके समान है ॥३३३॥ >

{ १ संज्ञानुवादेन संज्ञिषु मिथ्यादृष्ट्याद्यनिवृत्तिबादरान्ताना पुवेदवत । स सि १,८
२ शेषानां सामान्योक्तः कालः । स सि १,८ }

{ सण्णिसासणादीणं ओघसासणादीणं च सण्णितं पडि भेदाभावा ।

असण्णी केवचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पडुच्च सब्बद्धा १ ॥३३४॥

सुगममेदं सुतं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्याभवग्गहणं २ ॥३३५॥

तं जहा - एगो सण्णी असण्णीसु उपज्जिय खुद्याभवग्गहणमेतकालमच्छिय सण्णितं गदो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्ट ३ ॥३३६॥

तं जधा- एगो सण्णी मिच्छादिट्ठी असण्णी होदूण आवलियाए असंखेज्जदि
भागमेतपोग्गलपरियट्टे तत्थ परियट्टिदूण सण्णितं गदो ।

एवं सण्णिमग्गणा समता ।

आहारणुवादेण आहारएसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पडुच्चं सब्बद्धा ४
॥३३७॥ }

< क्योकि, संज्ञी सासादनादिकोका ओर ओघ सासादनादिकोका संज्ञित्वके प्रति केई भेद
नही है ।

असंज्ञी जीव कितने काल तक होते है? नाना जीवोकी अपेक्षा सर्वकाल होते है ॥३३४॥

यह सूत्र सुगम है ।

एक जीवकी अपेक्षा असंज्ञी जीवोका जघन्य काल क्षुद्रभवग्रहणप्रमाण है ॥३३५॥

जैसे- कोई एक संज्ञी जीव असंज्ञियोमे उत्पन्न होकर क्षुद्रभवग्रहणमात्र काल रह करके
संज्ञित्वको प्राप्त हो गया ।

एक जीवकी अपेक्षा असंज्ञियोका उत्कृष्ट काल अनन्तकालात्मक असंख्यात
पुदगलपरिवर्तनो तक उन्हीमे परिभ्रमण करके संज्ञित्वकी प्राप्त हुआ ।

जैसे - कोई एक संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव असंज्ञी होकर आवलीके असंख्यातवे भागमात्र
पुदगलपरिवर्तनो तक उन्हीमे परिभ्रमण करके संज्ञित्वको प्राप्त हुआ ।

इस प्रकार संज्ञीमार्गणा समाप्त हुई ।

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोमे मिथ्यादृष्टि जीव कितने काल तक होते हे? नाना जीवोकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥३३७॥ >

{ १ असंज्ञिनां मिथ्यादृष्टेर्नानाजीवापेक्षया सर्व : कालः । स सि १,८
२ एकजीवं प्रति जघन्येनक्षुद्रभवग्रहणम । स सि १,८
३ उत्कर्षेणानन्तः कालोऽसंख्योयाः पुदगलपरिवर्ताः । स सि १,८
४ आहारनुवादेन आहारकेषु मिथ्यादृष्टयेर्नानाजीवापेक्षया सर्व कालः । स सि १,८ }

{ सुगममेदं सुतं ।
एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुतं १ ॥३३८॥
एदं पि सुतं सुगमं चेय, ओघमिह उतत्थादो ।
उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणि -
उस्सीप्पिणीओ २ ॥३३९॥

तं जहा- एक्को मिच्छादिट्ठी विग्गंह कादूण उववणो । अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं
असंखेज्जासंखेज्जा ओसप्पिणि-उस्सपिणीपमाणं तत्थ परिभमिय आहारगो जादो । पुणो अवसाणे
विग्गह करिय अणाहारितं गदो । एवमाहारिमिच्छदिट्ठिस्स उक्कस्सकालो सिद्धो होदि ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेव्वलि ति ओघं ३ ॥३४०॥

कुदो ? णाणेगजीवजहण्णुकस्सकालेहि आहारिसासणादीणं ओघसासणादीहि भेदाभावा ।

अणाहारएसु कम्मइयकायजोगिभंगो ४ ॥३४१॥ }

< यह सूत्र सुगम है ।

एक जीवकी अपेक्षा आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोका जघन्य काल अन्तमुहुत है ॥३३८॥

यह सूत्र भी सुगम ही है, क्योंकि, ओघमे इसका अर्थ कह दिया गया है ।

उक्त जीवोका उत्कृष्ट काल अगुलके असंख्यातवे भागप्रमाण असंख्यातासंख्यात
अवसर्पिणी ओर उत्सर्पिणी है ॥३३९॥

जैसे- एक मिथ्यादृष्टि जीव विग्रह करके (आहारक मिथ्यादृष्टियोमे) उत्पन्न हुआ । अंगूलके असंख्यातवे भागप्रमाण असंख्यातसंख्यात अवसर्पिणी ओर उत्सर्पिणी तक उनमे परिभ्रमण करता हुआ आहारक रहा । पुनः अन्तमे विग्रह करके अनाहारकपनेको प्राप्त हुआ । इस प्रकारसे आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोका उत्कृष्ट काल सिद्ध हो जाता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेव्रली गुणस्थान तकके आहारकोका काल ओघके समान है ॥३४०॥

क्योकि, नाना औरएक जीवसम्बन्धी जघन्य और उत्कृष्ट कालकी अपेक्षा आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानोका ओघ सासादनादि गुणस्थानोके कालके साथ कोई भेद नहीं है ।

अनाहारक जीवोका काल कर्मणकाययोगियोके समान है ॥३४१॥

>

{ १ एकजीवं प्रति जघन्यनान्तमुहुर्तः । स सि १,८
२ उत्कर्षेणागुजासंख्येयभागा असंख्येयासंखेया उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः । स सि १,८
३ शेषानां सामान्योक्त कालः । स सि १,८
४ अनाहारकषु मिथ्यादृष्टियेर्नाजीवापेक्षया सर्वः कालः । एकजीवं प्रति जघन्येनैकः समयः ।
उत्कर्षेण }

{ कुदो ? मिच्छादिद्वी णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धं हेति, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगो समओ उक्कस्सेण तिण्णिण समयाः सासणसम्मादिद्वी असंजदसम्मादिद्वी णाणाजीवं पडुच्चं जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वे समया; सयोगिकेव्रलीण णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण तिण्णिण समयाउक्कस्सेण सखेज्जसमया एकजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण तिण्णिण समया इच्चेहि अणाहारमिच्छादिद्विआदीणं कम्मइयकायजोगिमिच्छादिद्विआदीहिंतो विसेसभावा ।

अजोगिकेव्रली ओघं १ ॥३४२॥

कुदो? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुतं एगजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण पंचहरस्सवखरुचारणकालो इच्चेदेहि भेदाभावा ।

(एवं आहारमग्गणा समता)

एदं कालाणिओगद्वारं सम्मतं २। }

< क्योकि, अनाहारक मिथ्यादृष्टि नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते है, एक जीवकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय होते है, और उत्कर्षसे तीन समय होते है; अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि । नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय, उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवे भाग एक जीवकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय तक होते है । सयोगिकेवलीका काल नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे तीन समय और उत्कर्षसे संख्यात समय है, तथा एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल तीन समय है इस प्रकारसे अनाहारक मिथ्यादृष्टि आदि जीवोंका कर्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि आदिसे विशेषताका अभाव है ।

अनाहारक अयोगिकेवलीका काल ओघके समान है ॥३४२॥

क्योकि, नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तमुहुर्त है एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल पांच हस्त्र अक्षरोके उच्चरण कालके समान है, इस प्रकार ओघप्ररुपणासे कोई भेद नही है ।

(इस प्रकार आहारमार्गणा समाप्त हुई ।)

इस प्रकार कालानुयोगद्वार समाप्त हुआ । >

{ त्रयः समयाः । सासादनसम्यग्दृष्टयसंयतसम्यग्दृष्टयोर्नानाजीवापेक्षया जघन्यनैकः समयः । उत्कर्षेणावलीकाया असंख्येयभागाः । एकजीवं प्रति जघन्येनैकः समयः । उत्कर्षेण द्वौ समयौ । सयोगिकेवलिनो नानाजीवापेक्षया जघन्येन त्रयः समयाः । उत्कर्षेण सख्येयाः समयाः । एकजीवं प्रति जघन्यश्चोत्कृष्टश्च त्रयः समयाः । स सि १,८ }

{ १ अयोगिकेवलीनां सामान्योक्तः । स सि १,८
२ कालो वर्णितः । स सि १,८ }